
Gangashtakam 9

गङ्गाष्टकम् ९

Document Information



Text title : Gangashtakam 9

File name : gangAShTakam9.itx

Category : devii, devI, nadI, aShTaka

Location : doc_devii

Author : Dhundiraja Bhatta

Transliterated by : Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

Proofread by : Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

Description/comments : Ganga Jnana Mahodadhi compiled by Acharya Ramapada Chakravarty

Latest update : June 13, 2010

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 13, 2020

sanskritdocuments.org



गङ्गाष्टकम् ९



श्रीगणेशाय नमः ।
चलद्विलोलवीचिविस्वलद्विवृत्तमीनमु-
ल्लसत्सहस्रपत्रविस्फुरत्परागपाटलम् ।
हिमाचलस्खलजलप्रवाहपाविताखिल-
प्रपञ्चमिन्दुचूडमौलिमन्दिरं महोऽवतात् ॥ १ ॥

रसालशालतालसत्तमालजालमालस-
द्विशालभालभस्मभृत्प्रवाहभास्वरं महः ।
सरोजगन्धसम्भ्रमन्मिलिन्दपुञ्जमञ्जुलै-
गुञ्जमानजह्नुन्दिनीतटं भजामहे ॥ २ ॥

चलत्तरङ्गमालमुच्छलज्झषोर्णजालमुज्वल-
त्प्रभाविशालमालमञ्जुवीरुधां गृहम् ।
परिज्वलद्भवानलप्रभावलोडिताखिल-
प्रपञ्चसिञ्चनामृतं पुनातु जह्नुजापयः ॥ ३ ॥

करालतिष्यकालकालसर्पसर्पदुल्लसत्
प्रभाविषानलावसेकसत्सुधारसैः (समैः) ।
कुरु त्वमीश्वरप्रियाङ्गने मदङ्गसङ्गता-
खिलाघसङ्गभङ्गमुल्लसत्तरङ्गरिङ्गितैः ॥ ४ ॥

निमज्जदागलालकालिजालशालिसम्यगु-
ल्लसत्सुरौघसुन्दरीमुखारविन्दसुन्दरम् ।
मिलत्पुरार्भकस्फुरत्कराभिघातविद्रव-
त्रिराकुलोरुमीनमम्बु भाति शम्भुभूषणम् ॥ ५ ॥

उदञ्चदुद्धताखिलच्छटामिलद्विभावसु-
प्रभाविडम्बितातिचञ्चदभ्रतारकोत्करम् ।
विलोलवीचिविस्वलत्समीरनीतसीकरं

पुरारिपत्तनस्थितं पुनातु पावनं पयः ॥ ६ ॥

सुराधिराजराजधर्मराजमुख्यनिर्जरा-
तिराजिपुण्यराशिरोशुसिद्धिदा कलौ (पुनः) ।
परामृतप्रदायिनी मुरारिपादचारिणी
पुरारिमौलिमालिनी सुरापगा विराजते ॥ ७ ॥

महीधरेन्द्रपन्नगेन्द्रकुन्दचन्दनद्रुम-
स्फुरत्करीन्द्रमण्डलामृतद्रवोपनायनम् ।
मिलन्निलिम्पसुन्दरीकपोलपत्रवल्लरी-
गलत्परागपिञ्जरीकृतं पयः पुनातु माम् ॥ ८ ॥

अनन्तभट्टसूरिसूनुदुण्डिराजसत्कवि-
प्रकल्पितं विचित्रपद्यचातुरीविभूषितम् ।
सुरापगाष्टकं नरः पठन्निदं स याति तत्
परं पदं प्रभूतभूमभागवैभवः (सदा) ॥ ९ ॥

इति श्रीमन्महीपण्डितधुरश्वतुस्समुद्रराजमान्यधुलोपनामकानन्तात्मज-
दुण्डिराजभट्ट विरचितं श्रीगङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at
gmail.com

—
Gangashtakam 9

pdf was typeset on June 13, 2020

—

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

